6

# बालिका शिक्षा की स्थिति – केंद्रीय विद्यालय दानापुर (प्रथम पाली), प्राथमिक कक्षाओं के संदर्भ में

दीपक कुमार*

*प्राथमिक विद्यालय एक ऐसी जगह है जहाँ अगर बालिकाओं को भी गतिविधि में भाग लेने के समान अवसर मिलें तो उनमें सीखने के प्रति ललक जाग्रत होती है तथा आत्मविश्वास आता है। किस प्रकार से विद्यालय में कक्षा तथा कक्षा के बाहर की विभिन्न गतिविधियों में बालिकाओं को शामिल किया जा सकता है, इसका एक उदाहरण दानापुर का केंद्रीय विद्यालय है।*

"सर मेरी बेटी पर ध्यान दीजिएगा। मैं अपनी बेटी को अच्छे से पढ़ते देखना चाहती हूँ। मैं अपने तीन बच्चों की फीस बड़ी मुश्किल से जुटा पाती हूँ। पर जितना हो सकेगा अपनी बेटी की शिक्षा पर उतना ज़रूर करूँगी। अपनी बेटी को पढ़ा-लिखा कर कुछ अच्छा ज़रूर बनाऊँगी।" कक्षा पाँचवीं की एक छात्रा अलीशा की माँ के कहे ये शब्द कमोबेश आज हर जागरूक माँ-बाप की अपनी लड़कियों को अच्छी शिक्षा दिलाने की कोशिश बयाँ करते हैं। चाहे धनी परिवार हो या गरीब तबका, बालिका शिक्षा को लेकर आज परिवार और समाज जागृत हुआ है।

भारत जैसे जटिल सामाजिक ताने-बाने वाले देश में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष तवज़्ज़ो देने की ज़रूरत है। न केवल महिला साक्षरता दर की वृद्धि अथवा लिंग-भेद की समाप्ति के लिए अपितु इसलिए भी कि नारी परिवार का आधार है। शिक्षित नारी घर-परिवार में शैक्षिक माहौल तैयार करती है, जिससे संपूर्ण साक्षर भारत का सपना साकार होगा। भारत में शैक्षिक क्रांति की परिकल्पना महिला शिक्षा की संतोषजनक प्रगति के बगैर संभव नहीं। पर सन् 2011 की साक्षरता दर कुछ और ही तस्वीर पेश करती हैं। सन् 2011 की साक्षरता दर के अनुसार भारत की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। इसमें पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत

* *प्राइमरी टीचर*, केंद्रीय विद्यालय, दानापुर छावनी (प्रथम पाली), पटना, बिहार

तथा महिला साक्षरता दर का राज्यवार विश्लेषण कई राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों यथा बिहार (46.40%), जम्मू एवं कश्मीर (49.12%), राजस्थान (47.76%) तथा दमन और दीव (46.37%), दादर और नागर हवेली (47.67%) आदि में महिला साक्षरता की दयनीय स्थिति को दर्शाता है। यहाँ स्त्री शिक्षा में गुणात्मक सुधार की ज़रूरत है। इसके अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण कड़ी है। सरल शब्दों में यह शिक्षा का आधार है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर लड़कियों की संतोषजनक उपस्थिति एवं प्रभावी भागीदारी उनका शैक्षिक भविष्य तय करती है। अत: किसी शैक्षिक संस्थान की प्राथमिक कक्षाओं में लड़कियों की स्थिति का आकलन मायने रखता है।

केंद्रीय विद्यालय दानापुर छावनी, केंद्रीय विद्यालय संगठन के अंतर्गत पटना संभाग के बेहतरीन विद्यालयों में से एक हैं। यह केंद्रीय विद्यालय संगठन के पाँच संस्थापक विद्यालयों में से भी एक है, जिसकी स्थापना सन् 1963 ई. में हुई। यह विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर पटना संभाग का सबसे बड़ा विद्यालय भी है। विद्यालय में शिक्षण कार्य दो पालियों में चलता है। प्राथामिक कक्षाओं के चार अनुभाग हैं। चूँकि विद्यालय बिहार, जहाँ महिला साक्षरता दर संतोषजनक नहीं है अत: विद्यालय की प्राथमिक कक्षाओं में बालिका शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण कई मायनों में महत्वपूर्ण है।

विद्यालय से संबंधित किसी चर्चा से पूर्व केंद्रीय विद्यालय, दानापुर छावनी, प्रथम पाली के विद्यार्थियों से संबंधित आँकड़े पर गौर करना आवश्यक है-

| केंद्रीय विद्यालय दानापुर छावनी (प्रथम पाली) | कुल | छात्रों की संख्या | प्रतिशत | छात्राओं की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों की संख्या | 2,385 | 1,287 | 53.96 | 1,098 | 46.03 |

**प्राथमिक कक्षाओं से संबंधित आँकड़े**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों की संख्या | 894 | 473 | 52.91 | 421 | 47.09 |
| अनुसूचित जाति विद्यार्थियों की संख्या | 146 | 79 | 54.11 | 67 | 45.89 |
| अनुसूचित जन जाति विद्यार्थियों की संख्या | 10 | 4 | 40 | 6 | 60 |
| अन्य पिछड़ा वर्ग विद्यार्थियों की संख्या | 117 | 64 | 54.70 | 53 | 45.30 |

(आँकड़े 31 अगस्त 2013 तक के हैं तथा नामांकन श्रेणी व अभिभावकों द्वारा उपलब्ध कराये जाति प्रमाणपत्रों पर आधारित हैं।)

उपर्युक्त आँकड़े प्राथमिक कक्षाओं में लड़कियों की प्रभावता को दर्शाते हैं। यद्यपि इसमें सुधार की गुंजाईश है। इसमें सेनाकर्मियों के बच्चों, अन्य नौकरी या पेशे वाले व्यक्तियों तथा व्यवसायिक परिवारों के अलावा वंचित तथा पिछड़े वर्गों के परिवारों के बच्चे भी हैं, जिसमें बड़ी संख्या में लड़कियाँ भी हैं। विद्यालय में सह-शिक्षा है। केंद्रीय विद्यालय संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप आदर्श माहौल में भेदभाव- रहित, गतिविधि आधारित शिक्षा उपलब्ध करने के लिए विद्यालय प्रतिबद्ध है।

प्राथमिक शिक्षा के महत्त्व को मद्देनज़र रखते हुए तथा प्राथमिक कक्षाओं में गुणवत्ता आधारित शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF -2005) के सुझावों के आधार पर केंद्रीय विद्यालय संगठन में 2008 में प्राथमिक कक्षाओं में न्यूनतम साझा कार्यक्रम (Common minimum Programme) निर्धारित किया गया जो तत्काल सभी केंद्रीय विद्यालयों में लागू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य था- भयमुक्त, गतिविधि व गुणवत्ता आधारित, सबके लिए समान शिक्षा केंद्रीय विद्यालय दानापुर छावनी में भी वरीय शिक्षकों के मार्ग-निर्देशन में इसे अमल में लाया जा रहा है। इसके अंतर्गत पूरे सत्र में शैक्षिक कक्षाओं में कंप्यूटर तथा तकनीकी आधारित मनोरंजनात्मक शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों तथा कार्यक्रमों का मनाया जाना शामिल है। यथा- सामुदायिक मध्याह्न भोजन सप्ताह, वयोवृद्ध अभिभावक दिवस (Grand Parent's Day), शैक्षिक भ्रमण, बाल दिवस कार्यक्रम, सह प्रतियोगिता आदि। इन कार्यक्रमों के साथ-साथ नियमित अंतराल पर बाल फिल्में दिखाई जा रही हैं इनके माध्यम से विद्यार्थियों को बेहतर अधिगम का अवसर प्रदान किया जा रहा है। इन शैक्षिक गतिविधियों, विभिन्न कार्यक्रमों अथवा प्रतियोगिताओं में छात्राओं की प्रभावपूर्ण भागीदारी का ध्यान भी रखा जाता है। कई बाल फिल्मों की विषयवस्तु लड़कियों की बहादुरी तथा नेतृत्व क्षमता पर आधारित हैं जो सभी विद्यार्थियों के मन में लड़कियों के प्रति सम्मान और छात्राओं को भविष्य में कुछ बेहतर करने की प्रेरणा देता है। इन सबके सकारात्मक असर उनके सतत व व्यापक मूल्यांकन के परिणामों से साफ झलकता है। छात्राओं का बेहतर परीक्षा परिणाम रहा है। कक्षा-शिक्षक द्वारा छात्र-छात्राओं में उनकी सहमति से मॉनिटर का चुनाव करना व उन्हें कक्षा संबंधित विभिन्न ज़िम्मेदारियाँ देना भी उनकी नेतृत्व क्षमता का विकास कर रहा है।

शैक्षिक गतिविधियों के अलावा अन्य गतिविधियाँ यथा- बालचर गतिविधियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विद्यालय वार्षिकोत्सव, वार्षिक क्रीड़ोत्सव, प्रात:कालीन सभा आदि शैक्षिक कक्षाओं के साथ-साथ समानांतर रूप से वर्षभर चलती रहती हैं इनमें प्राथमिक कक्षाओं की छात्राएँ अपनी समान भागीदारी द्वारा इन्हें सफल बनाने में अपनी भूमिका निभा रहीं है। यह निम्न तथ्यों से स्पष्ट है-

इस सत्र में अब तक संपन्न हुईं तीन प्रतियोगिताओं के नतीजों में छात्राओं का प्रदर्शन निम्नवत् है-

| प्रतियोगिता का नाम | परिणाम | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्रथम | | द्वितीय | | तृतीय | |
| छात्र | छात्रा | छात्र | छात्रा | छात्र | छात्रा | |
| अँग्रेज़ी सुलेख | 4 | 3 | 3 | 2 | 2 | 3 |
| हिंदी सुलेख | 2 | 3 | 2 | 3 | 1 | 4 |
| चित्रकला | 4 | 2 | 1 | 5 | 2 | 3 |

(प्रतियोगिताएँ कक्षा समूह I, कक्षा समूह II कक्षा समूह III कक्षा समूह IV एवं कक्षा समूह V के आधार पर संपन्न हुई हैं। प्रतियोगिताओं में कुछ स्थानों पर संयुक्त विजेता घोषित किये हैं।)

छात्राओं द्वारा प्रतियोगिता में प्राप्त कुल स्थान- 27

छात्रों द्वारा प्रतियोगिता में प्राप्त कुल स्थान- 21

यह आँकड़े छात्रों के मुकाबले छात्राओं के बेहतर प्रदर्शन को दर्शाते हैं। बालचर (Scout & Guide) गतिविधियों के अंतर्गत प्राथमिक कक्षाओं में छात्रों के लिए कब (Cub) और और छात्राओं के लिए बुलबुल (Bulbul) समूह हैं। वर्तमान में पंजीकृत विद्यार्थयों की संख्या इस प्रकार है-

## कुल पंजीकृत बुलबुल-

गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में विद्यमान नेतृत्व के गुणों के साथ उनका बेहतर व्यक्तित्व निर्माण किया जा रहा है। प्रात:कालीन सभा, विद्यालय वार्षिकोत्सव, वार्षिक क्रीड़ोत्सव, स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस समारोह सहित अनेक कार्यक्रमों में प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थी कविता पाठ, समूह गान, एकल व समूह नृत्य, पोशाक व साज-सज्जा, कहानीवाचन, लघु नाटिका आदि प्रस्तुत करते हैं, जिनमें छात्राओं की संतोषजनक भागीदारी का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। खेल प्रतियोगिताओं में प्राथमिक कक्षाओं के लिए छात्र और छात्रा समूह के अनुसार पृथक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

विद्यालय स्तर पर के ये प्रयास अभिभावकों के प्रयासों के बिना अधूरे हैं। प्रतिदिन विद्यालय में विद्यार्थियों के आने और जाने के समय बस और स्कूल वैन के अलावा विद्यार्थयों के अभिभावकों की भीड़ शिक्षा के प्रति जागरुकता को दर्शाती है। इनमें ज़्यादातर महिलाएँ होती हैं। इनमें उन अभिभावकों की भी अच्छी-खासी संख्या है जो अपनी बेटियों या रिश्तेदारों की लड़कियों को लाने और ले जाने आते हैं। लड़कियों की शिक्षा के लिए समाज में आ रही जागरुकता का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है। शिक्षकों से विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के लिए विद्यालय और अभिभावक दोनों का संयुक्त प्रयास आवश्यक है।

इन विश्लेषणों से केंद्रीय विद्यालय, दानापुर

छावनी में प्राथमिक कक्षाओं में बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर संतोष व्यक्त किया जा सकता है। यद्यपि और बेहतर परिणामों की प्राप्ति के लिए विद्यालय प्रयासरत है। विद्यालय में वंचित और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों विशेषत: छात्राओं की संतोषजनक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय विद्यालय संगठन के दिशा निर्देशों के अनुरूप प्रवेश में आरक्षण दिया गया है तथा नामांकन विभाग व गठित समिति द्वारा इन नियमों का सतर्कता से पालन किया जा रहा है। इन विद्यार्थियों को विद्यालय शुल्क में छूट के साथ-साथ अन्य लाभ यथा-पुस्तक, पोशाक आदि के लिए छूट का प्रावधान भी शामिल है। लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए एकल बालिका संतान (Single Girl Child) को प्रवेश में आरक्षण का प्रावधान है। उच्च कक्षाओं में शुल्क आदि में छूट दी गयी है। उपरोक्त बातें बालिका शिक्षा हेतु विद्यालय केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रतिबद्धता दर्शाती है।

पर एक सच यह भी है कि सामाजिक जागृति के बिना महिला शिक्षा की उन्नति के ये प्रयास अधूरे हैं। लड़कियों विशेषकर पिछड़े तथा वंचित वर्ग की लड़कियों को साक्षर बनाने हेतु समाज में एक अलख जगाने व परंपराओं में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। आज भी समाज का एक तबका लड़कियों की शिक्षा को बेवजह और निरर्थक मानता है। ज़रूरत ऐसे परिवारों और समाज की सोच बदलने की है। देश की महिलाओं ने राजनीति, खेल, शिक्षा जगत, प्रशासन, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। स्त्री शिक्षा को एक बेहतर मुकाम तक पहुँचाने के लिए लोगों के बीच ऐसे उदाहरणों के साथ एक सकारात्मक माहौल बनाने की ज़रूरत है। तभी महिला शिक्षा का स्तर नई ऊँचाइयों को छू पाएगा, तभी हम परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण व उन्नति में महिलाओं की सही भूमिका की अपेक्षा कर सकते हैं।

❑❑❑